Patrika (Indore), 03rd April 2022, Front Page – plus 04

सिटी प्राइम एंकर: बिजली उत्पादन और सप्लाय को ऑटोमैटिक करने में मिलेगी मदद, समस्या का संदेश भी मिलेगा मोबाइल पर

ट्रांसमिशन कंपनी के डाटा से आइआइटी बनाएगा सॉफ्टवेयर

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

इंदौर. मध्यप्रदेश पॉवर ट्रांसमिशन कंपनी के स्टेट लोड डिस्पेच सेंटर जबलपुर के डाटा से पॉवर सेक्टर के लिए सॉफ्टवेयर तैयार किया जा रहा है। यह सॉफ्टवेयर आइआइटी इंदौर के सहयोग से बनाया जाएगा। इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग विभाग की प्रोफेसर डॉ. तृप्ति जैन सॉफ्टवेयर बनाएंगी। इसमें मध्यप्रदेश पॉवर ट्रांसमिशन कंपनी भी सहयोग करेगी। जैन ने स्टेट लोड डिस्पेच सेंटर जबलपुर का दौरा कर डाटा और कार्यप्रणाली की जानकारी ली है।

मप्र पॉवर ट्रांसमिशन कंपनी प्रदेश की विद्युत वितरण कंपनियों को विभिन्न पॉवर प्लांट की अति उच्च

दाब की बिजली सप्लाय करती है। इसके लिए कई ग्रिड हैं। जबलपुर मुख्यालय में बने प्रदेश लोड डिस्पेच सेंटर पर प्रदेश के सेकंड से भी कम समय तक की बिजली डिमांड और सप्लाय का रीयल टाइम लेखाजोखा रखा जाता है। इसी डाटा के आधार पर उत्पादन, सप्लाय और लाइनों में लोड-व्यवधान का पता चलता है। पिछले दिनों मुख्य अभियंता मानव संसाधन व प्रशासन इंजीनियर संदीप गायकवाड़ ने आइआइटी प्रोफेसर और अन्य विशेषज्ञों के साथ सेंटर का दौरा किया था। सेंटर के फेसर मेजरमेंट यूनिट का डाटा उन्हें उपलब्ध कराया जाएगा।

ये भी होंगे फायदे

- जरूरत पड़ने पर बिजली जनरेटिंग सिस्टम कर सकेंगे बंद।
- प्रदेश की किसी भी लाइन पर ओवरलोड हुआ तो समय पर बंद किया जा सकेगा सप्लाय।
- जनरेटिंग सिस्टम को ऑन करने के लिए बजेगा अलॉर्म।
- संबंधित अधिकारियों-कर्मचारियों को ई-मेल तथा वाट्सऐप से ऑटोमैटिक मिलेंगे संदेश।

तेज स्पीड डाटा का होगा सही उपयोग

वर्तमान में डिस्पेच सेंटर में स्काडा सिस्टम से भी 200 गुना ज्यादा तेजी से डाटा संचालित होता है। प्रदेश के पॉवर सिस्टम का रीयल टाइम डाटा एक सेंटर में उपलब्ध होता है, जिसमें इलेक्ट्रिकल सिस्टम के सभी पैरामीटर समाहित रहते हैं। सभी सब स्टेशनों के उपकरणों व अति उच्च दाब लाइनों के पैरामीटर ऑप्टिकल फाइबर केबल के माध्यम से हाई स्पीड में उपलब्ध होते हैं। जो सिस्टम की मॉनीटरिंग और बचाव में बेहद उपयोगी हैं। डॉ. जैन ने बताया कि ग्रिड और सब स्टेशन का डाटा बहुत तेजी से आता है। सॉफ्टवेयर से उसका उपयोग आसान होगा। सप्लाय में व्यवधान का तुरंत पता लगेगा। समस्या का समय पर समाधान होगा और बिजली सप्लाय निर्बाध होगी।

स्टूडेंट भी शामिल

कंपनी के अधिकारियों के अनुसार, सॉफ्टवेयर बनने के बाद कंपनी जो काम मैन्युअल करती है, वह ऑटोमैटिक हो जाएंगे। पहला प्रयोग प्रदेश में किया जाएगा। इसके बाद आइआइटी चाहे तो दूसरे प्रदेश को तकनीक उपलब्ध करा सकता है। इस काम में डॉ. जैन को उनके पीएचडी स्टूडेंट अदनान इकबाल मदद करेंगे। आवश्यकतानुसार आइआइटी के और लोगों की भी मदद ली जा सकती है।